**कानोड़िया पी.जी. महिला महाविद्यालय, जयपुर**

**(हिन्दी विभाग)**

**प्रश्नावली, हिन्दी साहित्य**

**स्नातक तृतीय समसत्र 2024-25**

**(रीतिकालीन काव्य)**

**कवि केशवदास**

1.केशव की रचनाओं का परिचय देते हुए रामचंद्रिका के महत्व का विवेचन कीजिए।

2.रीतिकाल के प्रवर्तक कवि केशवदास के काव्य शिल्प पर उदाहरण सहित चर्चा कीजिए।

3.केशवदास को रीतिकाल का प्रवर्तक मानना उचित है या चिंतामणि को सतर्क उत्तर दीजिए।

4.केशवदास को सर्वाधिक सफलता संवादों से मिली है इस कथन की से उदाहरण विवेचना कीजिए।

5.पठित काव्यांश के आधार पर बताइए कि केशवदास को हृदय हीन कवि कहना कहाँ तक उचित है ?

***कवि बिहारी***

***6."***कवि बिहारी ने संयोग वियोग की मनोदशा हाव-भाव एवं वृत्तियों का अत्यंत आकर्षक अंकन किया है" इस कथन के परिप्रेक्ष्य में बिहारी के काव्य की समीक्षा कीजिए।

7.हिंदी साहित्य में सतसई के अर्थ और परंपरा को स्पष्ट करते हुए, हिंदी में लिखित सतसई साहित्य की विशेषताओं को उद्घाटित कीजिए।

8."बिहारी सतसई में भक्ति नीति और श्रृंगार की त्रिवेणी नहीं अपितु केवल श्रृंगार की एक वेणी है" इस कथन के प्रकाश में बिहारी सतसई के श्रृंगार चित्रण की सउदाहरण विवेचना कीजिए।

9. बिहारी सतसई के आधार पर, बिहारी की भाषा की सामासिकता और कल्पना की समाहार शक्ति की सउदाहरण विवेचना कीजिए।

10."बिहारी के काव्य में अनुभूति की सघनता और अभिव्यक्ति की श्रेष्ठता विद्यमान है" इस कथन की समीक्षा कीजिए।

***कवि देव***

***11.*** कवि देव के काव्य में आए अनुभूति और अभिव्यक्ति के सौंदर्य को सोदाहरण उद्घाटित कीजिए।

**कानोड़िया पी.जी. महिला महाविद्यालय, जयपुर**

**(हिन्दी विभाग)**

**प्रश्नावली, हिन्दी साहित्य**

**स्नातक तृतीय समसत्र 2024-25**

**(रीतिकालीन काव्य)**

**कवि केशवदास**

1.केशव की रचनाओं का परिचय देते हुए रामचंद्रिका के महत्व का विवेचन कीजिए।

2.रीतिकाल के प्रवर्तक कवि केशवदास के काव्य शिल्प पर उदाहरण सहित चर्चा कीजिए।

3.केशवदास को रीतिकाल का प्रवर्तक मानना उचित है या चिंतामणि को सतर्क उत्तर दीजिए।

4.केशवदास को सर्वाधिक सफलता संवादों से मिली है इस कथन की से उदाहरण विवेचना कीजिए।

5.पठित काव्यांश के आधार पर बताइए कि केशवदास को हृदय हीन कवि कहना कहाँ तक उचित है ?

***कवि बिहारी***

6."कवि बिहारी ने संयोग वियोग की मनोदशा हाव-भाव एवं वृत्तियों का अत्यंत आकर्षक अंकन किया है" इस कथन के परिप्रेक्ष्य में बिहारी के काव्य की समीक्षा कीजिए।

7.हिंदी साहित्य में सतसई के अर्थ और परंपरा को स्पष्ट करते हुए, हिंदी में लिखित सतसई साहित्य की विशेषताओं को उद्घाटित कीजिए।

8."बिहारी सतसई में भक्ति नीति और श्रृंगार की त्रिवेणी नहीं अपितु केवल श्रृंगार की एक वेणी है" इस कथन के प्रकाश में बिहारी सतसई के श्रृंगार चित्रण की सउदाहरण विवेचना कीजिए।

9. बिहारी सतसई के आधार पर, बिहारी की भाषा की सामासिकता और कल्पना की समाहार शक्ति की सउदाहरण विवेचना कीजिए।

10."बिहारी के काव्य में अनुभूति की सघनता और अभिव्यक्ति की श्रेष्ठता विद्यमान है" इस कथन की समीक्षा कीजिए।

***कवि देव***

11. कवि देव के काव्य में आए अनुभूति और अभिव्यक्ति के सौंदर्य को सोदाहरण उद्घाटित कीजिए।

12."कवि देव के काव्य में एक और वैराग्य भावना और तत्व चिंतन का सौंदर्य है तो दूसरी और तत्कालीन सामाजिक जीवन के चित्र भी हैं, इससे देव की काव्य कुशलता का परिचय मिलता है" इस कथन की उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।

13."रीतिकालीन कवियों में देव के स्थान और महत्व की विशिष्टता अतुलनीय रही है" इस कथन को स्पष्ट रूप से विवेचन कीजिए।

14.रीतिबद्ध कवि देव के अचार्यत्व पर प्रकाश डालिए।

15."रीतिकालीन कवियों में सिंगार का जितना मनोहर वर्णन देव ने किया है, उतना बिहारी मतिराम और घनानंद को छोड़कर किसी भी कवि ने नहीं किया है" इस कथन की सब प्रमाण समीक्षा कीजिए।

***कवि भूषण***

16."भूषण के वीर रस में केवल विरत तो भावना ही नहीं है अपितु राष्ट्र धर्म का देश प्रेम और राष्ट्रीयता की भावना भी है" इस कथन के उदाहरण सहित समीक्षा कीजिए।

17."भूषण एक जातीय कभी ना होकर, राष्ट्रीय भावनाओं के प्रतीक कवि थे" इस कथन के आलोक में भूषण की राष्ट्रीय और सांस्कृतिक भावना को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

18.रीतिकाल में लिखे गए भी रसात्मक काव्यों का संक्षिप्त परिचय देते हुए, भूषण कृत शिवा बावनी और छत्रसाल दशक पर प्रकाश डालिए और वीर काव्य में भूषण का स्थान निर्धारित कीजिए।

19. प्रमाणित कीजिए कि रीति काव्य में अकेले भूषण ही ऐसे रचनाकार हैं जिन्होंने अपने समय से हटकर वीर भावना और उसके सभी स्वरूपों को अपने काव्य में स्थान दिया है।

20."भूषण के कला पक्ष में भाषा की ओजस्विता, शैली की प्रभावशीलता और समुचित अलंकार योजना का विधान देखने को मिलता है" आवश्यक उदाहरण देते हुए इस कथन की पुष्टि कीजिए।

***कवि घनानंद***

21.पाठ्यक्रम में संकलित घनानंद के पदों को दृष्टिगत रखते हुए, उनकी सौंदर्य अनुभूति और विरह के क्षणों में प्रतीक्षा आकुलता की स्थितियों का सटीक विवेचन कीजिए।

22."घनानंद ने सौंदर्य देखा था, प्रेम किया था और अंत में विरह की दुसह वेदना भी भोगी थी और इन तीनों की अनुभूति उनकी कविता में विद्यमान है" इस कथन के संदर्भ में घन आनंद की अनुभूति के तीनों पक्षों का सम्यक विवेचना कीजिए।

23."लोग हैं लागि कवित्त बनावत।

मोहित मेरे कवित बनावत।।"

इस कथन के आधार पर घनानंद की प्रेम व्यंजना का विश्लेषण कीजिए।

24."घनानंद स्वच्छंदता वादी कवि थे" इस उक्ति के प्रकाश में, घनानंद के काव्य में आई स्वच्छंदतावादी प्रवृत्तियों का उदाहरण सहित विवेचन कीजिए।

25."नेही महा ब्रज भाषा प्रबीन,

औ सुंदरतानिके भेद को जानै।"

इस पंक्ति के आधार पर घनानंद के काव्य का मूल्यांकन कीजिए।

***कवि आलम***

26.कवि शेख आलम की काव्य कृतियों और उनका व्यक्तित्व परिचय प्रस्तुत कीजिए।

27."रीतिकाल के रीतिमुक्त कवि के रूप में, आलम का काव्य, श्रृंगार के उदात्त पक्ष को प्रकट करता है" इस कथन को ध्यान में रखते हुए आलम की श्रृंगार भावना को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

28."आलम प्रेम श्रृंगार के कवि तो है ही, इन भावों की अभिव्यक्ति के भी कुशल कलाकार हैं" इस कथन के आलोक में आलम के काव्य सौंदर्य का सउदाहरण विवेचन कीजिए।

29."आलम के प्रेम विषयक काव्य में अनुभूति की गहराई और स्वच्छंद काव्यधारा की सभी विशेषताएं दृष्टि होती हैं" पठित अंश के आधार पर इस कथन को प्रमाणित कीजिए।

30.रीतिमुक्त काव्यधारा में बोधा, ठाकुर, आलम और घनानंद के काव्य की तुलनात्मक समीक्षा प्रस्तुत कीजिए और बताइए इन कवियों में आपको सर्वाधिक प्रभावित करने वाला कवि कौन सा है और क्यों?

***कवि पद्माकर***

31."पद्माकर रीतिकाल के अंतिम चरण के कवि थे" इस कथन को स्पष्ट करते हुए समझाइए कि उनके काव्य में श्रृंगार की सरिता भी है और भक्ति की मंदाकिनी भी है तथा वीर रस का ओजस्वी प्रवाह भी है।

32."पद्माकर वास्तव में हिंदी साहित्य के क्षेत्र में वह पद्माकर हैं जिससे हिंदी साहित्य परागमय बना है।" इस कथन के आधार पर पद्माकर के काव्य में प्रकृति वर्णन के सौंदर्य का उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।

33."पद्माकर के काव्य में भावात्मक और कलात्मक सौंदर्य का सम्यक निरूपण हुआ है।" इस कथन की उदाहरण सहित समीक्षा कीजिए।

34."नाद सौंदर्य और भाषा की चित्रात्मकता की दृष्टि से पद्माकर का काव्य पर्याप्त प्रभावित करता है" उपर्युक्त उद्धरण देते हुए इस कथन की सार्थकता पर विचार कीजिए।

35. श्रृंगार के अतिरिक्त पद्माकर के काव्य में और कौन सी भाव धारा को स्थान मिला है? स्पष्ट उल्लेख करते हुए शृंगारेतर भाव धाराओं की विशेषता पर प्रकाश डालिए।

***कवि सेनापति***

36."ऋतु वर्णन की दृष्टि से सेनापति का कारण न केवल मनोरम है अपितु उस में ऐसे आकर्षक चित्र हैं जो पाठक का मन बांध लेते हैं" इस कथन की पुष्टि कीजिए।

37."सेनापति के काव्य में श्रृंगार के दोनों पक्ष तो विद्यमान हैं ही, साथ ही साथ उनकी सौंदर्य भावना भी स्पष्ट है" इस कथन कथन की उदाहरण सहित समीक्षा कीजिए।

38."सेनापति के काव्य में नाना भावों और रसों की सुंदर व्यंजना हुई है " इस कथन को उदाहरण देते हुए स्पष्ट कीजिए।

39."श्रृंगार वर्णन में सेनापति का ध्यान संयोग की अपेक्षा वियोग की ओर अधिक रहा है" उदाहरण देते हुए प्रमाणित कीजिए।

40.सेनापति राम के भक्त थे परंतु उनका दृष्टिकोण उदात्त और उदार था, तर्क सहित उत्तर दीजिए।

---

डॉ. शीताभशर्मा _ हिन्दी विभागाध्यक्ष_________

---